ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बकरी पालन आरंभ करने हेतु कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारियां

डॉ.संजय कुमार मिश्र[१] डॉ मुकुल आनंद[२] एवं डॉ सर्वजीत यादव[३]

१. पशु चिकित्सा अधिकारी मथुरा उत्तर प्रदेश
२. सहायक आचार्य पशु शरीर क्रिया विज्ञान विभाग दुवासु मथुरा उत्तर प्रदेश
३. निदेशक प्रसार दुवासु मथुरा उत्तर प्रदेश

19वीं पशुगणना के अनुसार पूरे भारत में बकरियों की कुल संख्या 13.517 करोड़ है। उत्तर प्रदेश में इनकी संख्या 42 लाख 42 हजार 904 है।

कई दशकों से गरीब ग्रामीणों के लिए बकरी एक जीवन आधार का कार्य कर रही है। बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो तुलनात्मक रूप से बहुत कम पूंजी में आरंभ किया जा सकता है एवं चारे के सार्वजनिक स्रोतों पर भी निर्भर रह कर आमदनी का निरंतर स्रोत हो सकता है। विगत वर्षों से पारंपरिक बकरी पालन धीरे धीरे व्यवसाय का रूप ले रहा है। आज के परिवेश में बकरी पालन केवल एक सहायक व्यवसाय के रूप में ही नहीं बल्कि एक अच्छी संभावनाओं वाले मुख्य व्यवसाय के रूप में स्थान बना रहा है। अन्य पशुओं को पालने की तुलना में बकरी पालन आर्थिक एवं प्रबंधकीय दृष्टिकोण से कई प्रकार से लाभप्रद है, क्योंकि बकरी पालन प्रारंभिक कम निवेश कम लागत की आवश्यकता है उच्च प्रजनन क्षमता विस्तृत प्रजनन काल भोजन के रूप में बड़ी संख्या में पौधों को चरण कम अवस्था में प्रजनन परिपक्वता निम्न स्तर के मोटे चारे के रेशों को पचाने की क्षमता आसान देखभाल वर्ष भर विक्रय की सुविधा और अनेक रोगों के प्रति प्रतिरोधी जैसी विशेषताओं से संपन्न है यह महिलाओं के लिए भी उपयुक्त है तथा इसे ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। बकरी पालन किसानों की सन 2024 तक आय दोगुनी करने का महत्वपूर्ण साधन बन सकती है। बकरी के दूध में अनेकों पोषक तत्व और औषधीय गुण मौजूद हैं। यह अधिकतर विशेषताएं या तो केवल बकरी के दूध में होती हैं या फिर गाय के दूध से तुलनात्मक रूप से अधिक होती हैं । बकरी पालन आरंभ करने से पूर्व निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये-

- बकरियों की प्रजाति का चुनाव बकरी पालन के उद्देश्य एवं स्थानीय वातावरण को ध्यान में रखते हुए ही करना चाहिए । बकरी पालन व्यवसाय के लिए उन्नत नस्ल के प्रजनक बकरे बाहर से लाकर स्थानीय बकरियों से ही नस्ल सुधार का कार्य करना चाहिए ।
- प्रजनन बकरा खरीदते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए कि बकरे की मां अधिक दूध व अधिक बच्चे देने वाली होनी चाहिए बकरा शारीरिक रूप से पूर्ण तथा स्वस्थ एवं उन्नत नस्ल का होना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- जो बकरी पालक या व्यवसाय बकरी के दूध उत्पादन और प्रसंस्करण के लिए बकरी पालन आरंभ कर रहे हैं उन्हें ऐसी नस्ल एवं बकरियों का चुनाव करना चाहिए जिनमें दूध उत्पादन एवं दुग्ध काल अधिक हो। सामान्यता बीटल, जखराना, जमुनापारी, बरबरी नस्ल की बकरियां अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए जानी जाती है। ऐसे नर का चुनाव करें जिसकी मां का दूध उत्पादन 3 लीटर प्रतिदिन एवं 150 दिन के दुग्ध काल में 200 लीटर दूध देने की क्षमता रही हो। यदि दूध उत्पादन का लेखा उपलब्ध हो तो दुधारू बकरियां एवं उनकी बच्चियों का चुनाव सही ढंग से करने में सटीक जानकारी मिल जाती है।

- मांस उत्पादन के लिए बकरी पालन का एक मुख्य सूत्र है की प्रति बकरी प्रतिवर्ष अधिकतम मांस उत्पादन। अतः जिन नस्लों में अधिक बच्चे देने वाली दो ब्यात के मध्य कम अंतराल बच्चों के लिए मां के पास पर्याप्त दूध, कम मृत्यु अधिक आहार पाचन क्षमता, अधिक मास हड्डी अनुपात आदि हो तो उनका चयन करें। नियमित मास बाजार के लिए नारों को नस्ल की बाजार मांग के अनुरूप 10 से 14 माह के अंदर बेच दे क्योंकि 10 से 12 माह के बाद नरो की खाना खाने की दर बढ़ जाती है परंतु वजन वृद्धि कम हो जाती है। और इसके साथ ही साथ मांस की गुणवत्ता एवं स्वाद में भी कमी आ जाती है। बरबरी नस्ल के नर बकरों का 9 माह से 16 माह की उम्र तक मांस उत्पादन के लिए अधिक मूल्य मिलता है तथा इस उम्र में ड्रेसिंग पृथ्वी अधिकतम 50 से 55% होता है।

- आरंभ मे उच्च आनुवंशिक क्षमता वाले 30 से 50 पशुओं के साथ बकरी फार्म शुरू करें ताकि 1 वर्ष में बकरी उत्पादन और प्रबंधन के सभी पहलुओं को न्यूनतम जोखिम के साथ समझा जा सके। हालांकि 2 वर्ष में आवास की जगह पशुओं की उपलब्धता और बाजार की मांग के आधार पर झुंड की संख्या बढ़ाई जा सकती है।

- जिन बकरियों की वृद्धि दर प्रसवता दर एवं उत्पादन सामान्य से कम हो उन्हें समय-समय पर फार्म से निष्कासित करते रहना चाहिए।